Himalayan J. Soc. Sci. & Humanities ISSN: 0975-9891
Vol. 18, (2023) 79-82 DOI: https://doi.org/10.51220/hjssh.v18i1.11

# Vedic period Education and culture

**Nimita Kanyal**

*Department of Sanskrit LMS Govt PG College Campus, Pithoragarh, Uttarakhand*

*Corresponding Author Email id: nimitakanyal1982@gmail.com

**Received: 11.12.2023; Revised: 28.12.2023; Accepted: 29.12.2024**
©Society for Himalayan Action Research and Development

**Abstract:** Indian culture, full of feelings of human welfare and world welfare, is one of the oldest cultures in the world. Vedic education and culture have been praised in the country and abroad. Indian culture and education are contained in Vedic literature. A well-organized form of education is visible in Vedic literature. The main objective of education at that time was to develop good values and civilization. Through education, the all-round development of high ideals like morality, philanthropy and feeling of public welfare was to be done in human beings. The aim of the form of education during the Vedic period was to develop a high character by assimilating high ideals and ideas. Education means: learning or acquiring knowledge. Education is the natural, balanced and dynamic development of man's internal powers, which is the statement of the great educationist "Pestology".

# वैदिक कालीन शिक्षा एवं संस्कृति

निमिता कन्याल
संस्कृत विभाग
एल एम यस राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्द्यालय
पिथौरागढ़ उत्तराखंड

## सारांश

मानव कल्याण एवं विश्व कल्याण की भावनाओं से ओत–प्रोत भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है। वैदिक शिक्षा एवं संस्कृति का देश–विदेश में गुणगान होता रहा है। वैदिक साहित्य में भारतीय संस्कृति एवं शिक्षा निहित है। वैदिक साहित्य में शिक्षा का सुव्यवस्थित रूप दृष्टिगोचर होता है। तत्कालीन शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य उत्तम संस्कार एवं सभ्यता का विकास करना था। शिक्षा के माध्यम से मानव में सदाचार परोपकार, जनहित की भावना जैसे उच्च आदर्शो का सर्वांगीण विकास कराना था। वैदिक कालीन शिक्षा के स्वरूप का उद्देश्य उच्च आदर्शों एवं विचारों को आत्मसात कर उच्चचरित्र का निर्माण करना था। शिक्षा का अर्थ है– सीखना अथवा ज्ञार्नाजन करना। ''मनुष्य की आन्तरिक शाक्तयों का स्वाभाविक, सन्तुलित तथा गत्यात्मक विकास ही शिक्षा है''। जो कि महान शिक्षाविद पेस्टालॉजी का कथन है।

सर्वे भवंतु सुखिनः सर्वे संतु निरामयाः।।
सर्वे भद्राणि पश्यंतु मा कश्चिद दुखभाग्भवेत[1]।।

Himalayan J. Soc. Sci. & Humanities ISSN: 0975-9891
Vol. 18, (2023) 79-82 DOI: https://doi.org/10.51220/hjssh.v18i1.11

वैदिक ज्ञान परम्परा श्रुति (वेद) परम्परा से होकर आगे बढ़ी है। शुरूमुख से सुनकर ही शिष्य ज्ञान प्राप्त करता था। सुनकर ज्ञानार्जन करने के कारण ही वेदों को श्रुति कहा जाता है। वेद मंत्रों में ज्ञान की बातें कही गयी हैं। शिक्षा से तात्पर्य मनुष्य के मस्तिष्क में अन्तर्निहित सर्वमान्य वैध विचारों को आगे बढ़ाना है। वैदिक कालीन शिक्षा न तो पुस्तकीय ज्ञान में विश्वास रखती थी, और न ही, जीविकोपार्जन का साधन थी। यह पूर्ण रूप से नैतिक एवं आध्यात्मिक ज्ञान का सोपान थी। वैदिक कालीन शिक्षा का उद्देश्य मानव का सर्वांगीण विकास था।

प्रत्येक समाज की शिक्षा का स्वरूप उस समाज की संस्कृति पर निर्भर करता है। शिक्षा के अभाव में कोई भी समाज न संस्कृति को सुरक्षित रख सकता है और न ही उसका विकास कर सकता है। शिक्षा का स्वरूप समाज की आवश्यकताकों के अनुरूप होता है जो कि संस्कृति द्वारा निर्धारण होती हैं। शिक्षा के माध्यम से ही संस्कृति का हस्तान्तरण एक पीढी से दूसरी पीढ़ी के लिए सम्भव हो पाता है।

वैदिक कालीन भारतीय संस्कृति का मूल आधार वैदिक वाङ्मय है। संस्कृति के आधार वेद है जो चार हैं – ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद हमारी सम्पूर्ण ज्ञाननिधि के सागर हैं। ''सर्व ज्ञान भयो हि सः''[2]

वेदों में हमें वैदिक कालीन भारतीय संस्कृति का स्वरूप प्राप्त होता है। संस्कृति शब्द की व्युत्पत्ति सम उपसर्ग, कृ धातु एवं क्तिन प्रत्यय से हुई है– सम् + कृ + क्तिन = संस्कृति

संस्कृति समाज का आत्म तत्व होती है। यह मानव के सामाजिक जीवन की अन्तश्चेतना है। संस्कृति से मूलतः उन संस्कारों का अवबोध होता है जिनका आश्रय प्राप्त कर सामाजिक जीवन मूल्यों एवं आदर्शों की संरचना होती है। यजुर्वेद में संस्कृति के विषय में कहा गया है कि संस्कृति विश्व का उन्नयन करती है। ''सा संस्कृति प्रथमा विश्ववारा''[3]।। संस्कृति के अंतर्गत मानव जीवन की समग्र कार्य पद्धति जैसे– आचार – विचार, आहार – विहार, रहन–सहन, सभी का समाहार होता है। संस्कृति मानव के संस्कारों की निर्मात्री है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि संस्कृति का तात्पर्य ''आदर्श संस्कार'' से भी है। किसी भी समाज, देश, राष्ट्र के मानव के धर्म, दर्शन, ज्ञान – विज्ञान से सम्बद्ध क्रिया कलाप तथा आदर्श सभ्यता, संस्कार इन सभी का सामंजस्य संस्कृति है। वैदिक कालीन संस्कृति व्यापक एवं शाश्वत है। ऋग्वेद में भारतीय संस्कृति का विकसित रूप प्राप्त होता है। विश्वबन्धुत्व की भावना भारतीय संस्कृति का आधार स्तम्भ है। वैदिक कालीन संस्कृति की विशेषता आध्यात्मिक भावना है। जो त्याग से अनुप्राणित तपस्या से पोषित है।

भारतीय ऋषि मुनियों ने मानव के चहुंमुखी विकास एवं व्यक्तिगत जीवन को सुखमय बनाने के लिए थम–नियमों का पालन आवश्यक बताया है। इसमें मानव का शारीरिक मानसिक विकास सम्भव है, थम–

नियम पाँच हैं – यम – सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अस्तेय, अपरिग्रह। नियम – शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर प्रणिधान इत्यादि।

वेदो, उपनिषदों में कहा गया है कि – मातृदेवोभव, पितृदेवोभव, आचार्यदेवोभव[4]।

भारत अपनी पुरातन एवं सनातन संस्कृति के आधार पर आज विश्व विख्यात है। अपनी संस्कृति के आधार पर ख्याति प्राप्त करने वाला जीवंत उदाहरण भारतवर्ष है। अपनी सांस्कृतिक श्रेष्ठता के कारण सम्पूर्ण विश्व में गुरुपद से गौरवान्ति है। संस्कृति किसी भी राष्ट्र की वास्तविक शक्ति एवं समृद्धि की परिचायक होती है। भारतीय संस्कृति सदैव आध्यात्मप्रधान रही है। सत्य, अहिंसा, तपश्चरण आदि स्थायी मूल्य मनुष्य को आगमन के बन्धन से मुक्ति प्रदान करते हैं। त्याग की भावना वैदिक वाङ्मय में सर्वत्र विद्यमान है –

''ईशावास्यामिदं सर्वयत्किञ्च जगत्यां जगत
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद धनम्''[5]

वैदिक संस्कृति मानव को सत्यमार्ग की ओर अग्रसर कराती है– सत्यं ब्रह्मेति, सत्यं हवेव ब्रह्म ॥[6]

वैदिक संस्कृति अथवा वैदिक साहित्य सदैव मानव को सन्मार्ग की ओर अग्रसर कराता है– वैदिक वाङ्मय में मानव कल्याण हेतु ज्ञान दिया है–

''भद्र नो आपि वातय मनः''[7]
''उत्तिष्ठ जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत'' [8]

वैदिक संस्कृति का ज्ञान वेद, वेदांत, उपनिषद आदि में संग्रहीत है। वैदिक संस्कृति ने विश्व को ऐसे अनेक आदर्श चरित्र दिए हैं। जिनका अनुसरण कर उच्च नैतिक, सामाजिक आदशों को ग्रहण किया जा सकता है। शिक्षा एवं संस्कृति का परस्पर सम्बन्ध है। ''शिक्षा मानव को जीवन शक्ति, प्राणशक्ति, यश और प्रतिष्ठा देती है[9]। शिक्षा मानव जीवन की बहुमूल्य निधि है। शिक्षा ही स्थूल और सूक्ष्य विषयों का ज्ञान करा सकती है। शिक्षा से ही विश्व में पंचतत्वों के गुण–धर्म, उनकी जीवनोपगिता, विज्ञान का ज्ञान, आत्मा–परमात्मा, जीवन–मृत्यु, प्रकृति – पर्यावरण, आचार शिक्षा, नीति शिक्षा, विविध विज्ञानों का रहस्य, बौद्धिक विकास, स्वास्थ्य, धार्मिक क्रियाकलाप, अन्धविश्वासों का निराकरण, सामाजिक और राजनीतिक चेतना का मार्गदर्शन शिक्षा ही कर सकती है। शिक्षा जीवन के लिए प्रकाश स्तम्भ है। परम ज्योति और देवी वरदान है।

इस प्रकार शिक्षा मानव के सर्वांगीण विकास में सहायक होती है। शिक्षा व्यक्ति को स्वयं के लिए एवं समाज के लिए उपयोगी बनाती है। सामाजिक कर्तव्यों एवं नागरिकता के गुणों को विकसित कर उन्हें समाज के

भावी सदस्य के रूप में तैयार करती है। किसी भी समाज की संस्कृति समाज के सम्पूर्ण जीवन को प्रभावित करती है। प्रत्येक समाज की शिक्षा का स्वरूप उस समाज की संस्कृति पर निर्भर करता है। वैदिक कालीन शिक्षा मानव जीवन की आधार शिला है। और संस्कृति मानव विकास की प्रकिया है । वैदिक कालीन शिक्षा एवं संस्कृति में सदैव मानव कल्याण की कामना दृष्टिगोचर होती है।

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. बृहदारण्यकोपनिषद ।
2– मनुस्मृति ।
3– यजुर्वेद ।
4– तैतरीय उपनिषद
5– ईशावास्योपनिषद
6– बृहदारण्यकोपनिषद
7– ऋग्वेद। 1/73/38
8– कठोपनिषद, 1/3/14
9– अथर्ववेद 6/41/2